International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

भारत में जैन धर्म का उद्भव, विकास एवं पतन

Rajiv Maan
Lecturer in History
Department of Education, Haryana
E-mail: rajivmaan12@gmail.com

शोध आलेख सार– वस्तुतः भारत में छठी शताब्दी ई0पू0 में जैन धर्म का उद्भव होना धार्मिक क्रांति की शुरूआत माना जाता है। यह समय सम्पूर्ण विश्व में बौद्धिक जागरण तथा आध्यात्मिक अशांति का युग था। इस समय भारत में ब्राह्मण धर्म की जटिलता के कारण धार्मिक कर्मकांड और यज्ञ काफी महंगे हो गए थे तथा धर्म का स्वरूप बिगड़ गया था। ऐसे समय में स्वामी महावीर ने जैन धर्म के रूप में एक सरल धर्म जनता के सामने पेश किया जो आगे चलकर श्वेताम्बर तथा दिगम्बर में बंट गया। जैन धर्म में भी जैन संघों का काफी महत्व है। इसमें महिलाओं को भी प्रवेश का अधिकार दिया गया लेकिन इस धर्म की यह विडम्बना रही कि स्वामी महावीर की मृत्यु के बाद यह धर्म धीरे–धीरे पतन के मार्ग पर चल पड़ा। फिर भी इस धर्म ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को काफी प्रभावित किया तथा जैन साहित्य के रूप में एक समृद्ध विरासत भारत में मौजूद है और जैन मन्दिर समृद्ध स्थापत्य कला का अनूठा नमूना है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत में जैन धर्म के उद्भव, विकास एवं पतन का विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द–भारतीय संस्कृति, धार्मिक क्रांति, बौद्धिक जागरण, आध्यात्मिकता, श्वेताम्बर, दिगम्बर।

भूमिका– वस्तुतः छठी शताब्दी ई0पू0 का युग आध्यात्मिक अशान्ति तथा बौद्धिक जागरण का एक विलक्षण युग था।[1] भारत में छठी शताब्दी ई0पू0 कई महान युग प्रवर्तकों का जन्म हुआ जिन्होंने अपने धार्मिक चिन्तन के द्वारा भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में अहम् भूमिका अदा की। इस समय वैदिक संस्कृत का स्वरूप काफी कठिन हो चुका था और इसे समझने के लिए जन साधारण को ब्राह्मण वर्ग पर ही निर्भर रहना पड़ता था। इसके साथ ही उतर वैदिक काल में मंत्रों का स्थान यज्ञों ने ले लिया तथा यज्ञ करवाने में काफी धन खर्च होता था। यह कार्य केवल अमीर

[1] कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, पृ0 100.

लोग या राजा–महाराजा ही करवा सकते थे। साधारण जनता मोक्ष प्राप्ति के लिए यज्ञों के स्थान पर कोई सरल उपाय की तलाश में थी। इस समय ब्राह्मणों को ही केवल विद्या अध्ययन का अधिकार था, जो जनसाधारण के लिए क्रोध का विषय बन गया। भारत में जब ब्राह्मण धर्म के विरूद्ध प्रतिक्रिया शुरू हुई तो इसमें स्त्रियों ने अहम् भूमिका अदा की। समाज में फैले व्याप्त आडम्बर, बलि–प्रथा, तंत्र–मंत्र, जातिवाद, आदि के कारण आम जनमानस किसी सरल धर्म की तलाश में था।[2] इस वातावरण में महावीर स्वामी ने हिन्दू धर्म में सुधार करके उसे नये रूप में जनता के सामने रखा और जनता ने उनके सरल उपदेशों को सहजता से स्वीकार कर लिया। इस धर्म को सरकारी संरक्षण भी प्राप्त हुआ और इसके प्रचार–प्रसार में तेजी आई।

जैन धर्म के सिद्धान्त– जैन धर्म भारत का अति प्राचीन धर्म है। जैन धर्म के साहित्य के अनुसार वृषभदेव (आदिनाथ) जैनियों के पहले तथा स्वामी महावीर अन्तिम व 24वें तीर्थकर थे।[3] स्वामी महावीर का जन्म ईसा के लगभग 618वर्ष पहले वैशाली के निकट कुण्ड ग्राम में एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इससे पहले जैन धर्म के 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे, जिन्होंने गृह त्याग करके घोर तपस्या की और चार उपदेशों के रूप में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, तथा अपरिगृह, के बारे में बताया।[4] वास्तव में जैन धर्म को स्थायीत्व प्रदान करने में स्वामी महावीर का ही महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने 30 वर्ष की आयु में ही साधु जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था। इन्हें ऋजपालिका नदी के तट पर अपनी तपस्या के 13वें वर्ष में साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (निर्मल) ज्ञान प्राप्त हुआ। तभी से वे तीर्थकर और महावीर कहलाए। इसके बाद स्वामी महावीर ने निरन्तर 30 वर्ष तक मगध, अंग, मिथिला और कोशल प्रदेश में जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार किया। इस धर्म के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं–

1. जैन धर्म के अनुसार यह सृष्टि अनादि और अनन्त है। अतः जैन धर्म के अनुयायी ईश्वर के स्थान पर तीर्थकरों की पूजा करते हैं तथा उनका सृष्टि के निर्माता, पालनकर्ता तथा हर्ता ईश्वर में कोई विश्वास नहीं हैं।

[2] डी.एन.झा, आरम्भिक भारत का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 87.

[3] शैलेन्द्र सेंगर, प्राचीन भारत का इतिहास, पृ0 126.

[4] विमलचन्द्र पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 272.

2. यह धर्म आत्मा के अस्तित्व और अमरत्व में विश्वास करता है। इस धर्म के अनुसार आत्मा सर्वदृष्टा है तथा यह प्रकाशमान है।
3. इस धर्म के अनुसार आत्मा को सांसारिक बन्धनों से मुक्त करने के लिए पंचमहाव्रत का पालन करना पड़ता है। ये पांच महाव्रत हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिगृह तथा ब्रह्मचर्य।
4. यह धर्म त्रिरत्न को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताता है। ये त्रिरत्न हैं– सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन तथा सम्यक चरित्र।[5]
5. इस धर्म में कर्म को प्रधान माना गया है। जब मनुष्य सांसांरिक बन्धन में बंधकर कोई कर्म करता है तो उसकी आत्मा उन्हीं कर्मों के पाश में फंस जाती है। अतः सांसारिक विषय–वासनाओं से दूर रहकर ही कर्म बन्धन से मुक्ति पाई जा सकती है।
6. इस धर्म में तप का बहुत महत्व है। भगवान महावीर ने भी 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की थी।[6] ये तप दो प्रकार के हैं– बाह्य तप, जैसे– उपवास, भिक्षुचर्या, रसपरित्याग, इन्द्रियों पर नियंत्रण आदि। आभ्यन्तर तप में विनय, सेवा, स्वाध्याय करना ध्यान करना, आसन लगाना, प्रायश्चित करना आदि शामिल हैं।
7. यह धर्म दो सम्प्रदायों– श्वेताम्बर तथा दिगम्बर में बंटा हुआ है। श्वेताम्बर लोग श्वेत वस्त्र पहनते हैं और अपनी मूर्तियों को भी श्वेत वस्त्र पहनाते हैं। दिगम्बर लोग निर्वस्त्र रहकर तीर्थकरों की पूजा करते हैं। दिगम्बर सम्प्रदाय में नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है।
8. यह धर्म पूर्ण अहिंसा में विश्वास करता है। इसके अनुसार सभी प्रकार के प्राणियों के साथ प्रेमपूर्वक तथा संयमपूर्ण व्यवहार ही अहिंसा है।
9. यह धर्म अनेकात्मवाद का समर्थक है। इस धर्म के अनुसार सभी जीवों की आत्मा अलग–अलग है।
10. यह धर्म महिलाओं की स्वतंत्रता का समर्थक है। आज भी जैन धर्म में अनेकों महिलाएं तपस्या कर रही हैं और जैन धर्म की कटु अनुयायी है।

[5] कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, पृ0 106.

[6] प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत–लगभग 600ई0 तक, पृ0 139.

11. यह धर्म मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति या निर्वाण को मानता है।[7] इस धर्म के अनुसार मनुष्य कर्म फल से मुक्त होकर ही सांसारिक आवागमन के चक्र से छुटकारा पा सकता है।

जैन धर्म का पतन– वस्तुतः जैन धर्म बौद्ध धर्म की तरह कभी भी विदेशी भूमि तक नहीं फैल पाया। इसका प्रमुख कारण यह था कि स्वामी महावीर और उसके अनुयायी इस धर्म का प्रचार करने में अधिक रूचि नहीं लेते थे। बल्कि प्रचार की बजाय वे शान्ति को अधिक पसन्द करते थे। इसकी कठोर तपस्या तथा अहिंसा के सिद्धान्त के कारण भी यह अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाया।[8] फिर भी इस धर्म का उतना फैलाव नहीं हो सका, जितना बौद्ध धर्म का हुआ। इसके पतन के निम्नलिखित कारण थे–

इस धर्म ने वैदिक दर्शन का पूर्ण परित्याग नहीं किया और कुछ नये और क्रांतिकारी विचारों की कमी के कारण इसकी लोकप्रियता में कमी आई।

इस धर्म में तप या तपस्या का मार्ग बहुत कठिन था जो साधारण व्यक्तियों के लिए अरूचि का विषय बन गया।[9]

इस धर्म में अहिंसा का कठोरता से पालन करना क्षत्रिय, ब्राह्मण तथा शूद्रों के लिए संभव नहीं था, इसलिए यह धर्म केवल वैश्य समाज तक सिमट कर रह गया।

चूंकि यह धर्म जातिवाद का विरोधी रहा है फिर भी जैन धर्म में सभी जाति व धर्म के लोगों को दीक्षित करने की भावना पैदा नहीं हो सकी।

बौद्ध धर्म की तुलना में यह धर्म कम पसन्द किया गया क्योंकि बौद्ध धर्म मध्यमार्गी था और वह सामान्य जनता के लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना रहा। इससे जैन धर्म बौद्ध धर्म की तुलना में पिछड़ गया।

[7] विमलचन्द्र पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 280.

[8] डी.एन.झा, आरम्भिक भारत का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 90.

[9] प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत–लगभग 600ई0 तक, पृ0 144.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

जैन संगठनों में लोकतंत्र का अभाव था और प्रारम्भ से ही जैन धर्माचारियों का जैन धर्म पर अधिक प्रभाव रहा। इससे जैन धर्म के अनुयायियों में भी एकता की भावना पैदा नहीं हो सकी। जैन धर्म का विभाजन इस धर्म के पतन का मुख्य कारण बना।[10]

इस धर्म को प्रतिभाशाली विद्वानों तथा अधिक राजाओं का संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ जैसा बौद्ध धर्म को सम्राट अशोक, कनिष्क तथा हर्ष का हुआ था।[11]

जैन धर्म की देन– वस्तुतः जैन धर्म के अनुयायी शान्ति प्रिय रहे हैं और प्रारम्भ में इस धर्म ने हिन्दू धर्म का भी कोई विरोध नहीं किया तथा हिन्दू समाज पर इसका काफी प्रभाव पड़ा। इन लोगों ने संसार में रहकर ही अच्छे कर्म करने पर बल दिया तथा जाति–पाति का विरोध किया। इस धर्म में अहिंसा को परम धन माना गया है तथा पशुओं की बलि तक की भी रोक की बात की।[12] स्वामी महावीर ने बहुत सीधे और सरल शब्दों में अपनी बात जनता तक पहुंचाई। चूकि स्वामी महावीर राजा के पुत्र थे। इसलिए इस धर्म की अधिक उन्नति हुई। जैन भिक्षओं ने भी इस धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसको कई राजाओं का संरक्षण भी प्राप्त हुआ तथा स्वयं स्वामी महावीर के महान व्यक्तित्व का भी इस पर प्रभाव पड़ा। इसकी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को निम्नलिखित देन है–

- इस धर्म के कारण भारतीय साहित्य काफी समृद्ध हुआ तथा प्रारम्भ में मागधी भाषा में जैन साहित्य की रचना हुई। दसवीं शताब्दी के बाद जैन धर्म के अनुयायियों ने जैन साहित्य का संस्कृत, तमिल तथा गुजराती भाषा में भी अनुवाद किया जिसके कारण साहित्यिक दृष्टि से जैन धर्म की यह महत्वपूर्ण देन मानी जाती है। जैन धर्म में 'चौदह पूर्वज' नामक पुस्तक एक महान रचना है,[13] जिसके उपदेश स्वामी महावीर ने अपने अनुयायियों को दिये थे।

[10] शैलेन्द्र सेंगर, प्राचीन भारत का इतिहास, पृ0 134.

[11] एस.एल.नागोरी एवं कान्ता नागोरी, प्राचीन भारत का सामाजिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 119.

[12] डी.एन.झा, आरम्भिक भारत का संक्षिप्त इतिहास, पृ0 89.

[13] कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, पृ0 114.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

- इस धर्म के अनुयायियों द्वारा अनेक जैन मठों का निर्माण किया गया जो स्थापत्य कला की दृष्टि से भारतीय संस्कृति को एक महान देन है। जैनियों ने विशालकाय मूर्तियां निर्मित की तथा सुन्दर मन्दिरों का भी निर्माण करवाया जिससे मूर्तिकला का भी विकास हुआ। आज भी मैसूर में जैन धर्म की 70फुट की एक मूर्ति विद्यमान है। जैनियों ने कई विशाल भवन, गुजरात तथा गिरनार में बनवाये। भीलवाड़ा के जैन मन्दिर आज भी जैन स्थापत्य कला का अनूठा नमूना है। इस धर्म ने भारतीय चित्रकला को उच्च कोटि का योगदान दिया।
- इस धर्म ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला तथा जाति प्रथा के बन्धन को ढीला कर दिया। इसके आगमन से ब्राह्मण धर्म की कठोरता से आम जनता को छुटकारा मिला। इसने नारी स्वतंत्रता का भी समर्थन किया तथा अपने संघ के द्वार नारियों के लिए खोल दिए।
- इस धर्म ने भारत के कई राजाओं के विचार भी बदल दिये। अब वे राजा प्रजापालक बनकर अपनी प्रजा से संतान जैसा व्यवहार करने लग गए तथा भारत में गणतंत्रीय राज्यों का युग शुरू हो गया।

सारांश– इस तरह भारत में जैन धर्म का उद्भव एवं विकास एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में लिया जा सकता है। इसने भारतीय संस्कृति को काफी कुछ दिया है। इस धर्म ने कर्म के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया तथा ब्राह्मण धर्म की कठोरता से जनता को छुटकारा दिलाया। जैन धर्म के कारण भारतीय साहित्य व कला के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। जैन साहित्य की रचना ने भारतीय साहित्य कोष को समृद्ध किया। आज भी जैन मन्दिरों के रूप में स्थापत्य कला के अनूठे नमूने भारत में विद्यमान हैं। इसके बावजूद भी यह धर्म व्यापक प्रचार व प्रसार के अभाव में विदेशी धरती तक नहीं पहुंच पाया और भारत में भी वैश्य समाज तक ही सिमट कर रह गया।

सन्दर्भ सूची–

1. विमलचन्द्र पॉण्डेय, प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास , सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, इलाहबाद, 1992.
2. सुमन गुप्ता, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, स्वामी प्रकाशन जयपुर, 2000.
3. रोमिला थापर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास , ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

4. शैलेन्द्र सेंगर, प्राचीन भारत का इतिहास, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
5. डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
6. एस.एल.नागोरी एवं कान्ता नागोरी, प्राचीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2007.
7. डी.एन.झा, आरम्भिक भारत का संक्षिप्त इतिहास, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2009.
8. प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत– लगभग 600ई0 तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
9. कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010.
10. बी.स्टेन, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, 2012.
11. ए.एस.डूडी, एन्सियंट हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेहा पब्लिशर्स , दिल्ली, 2012.
12. रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600ई0 तक, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012.
13. अबुस्सलाम, भारतीय इतिहास, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.